Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 05, (अक्टूबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 40–44

दलहनी अनाजों के नुकसानदायक कीट–ब्याधियॉ एवं रोग, सुरक्षित भण्डारण एवं निवारक उपाय

डॉ. फूलचन्द,
वरीय वैज्ञानिक, प्रसार शिक्षा निदेशा,
डॉ.रा.प्र.के.कृ.वि.,पूसा, बिहार, भारत।

Email Id: – phoolchand@rpcau.ac.in

प्राचीन काल से ही भारत में उगायी जाने वाली फसलों में दलहनी फसलों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। ये फसलें सामान्यतः प्रोटीन की प्रमुख श्रोत मानी जाती है। दलहनी फसलों के अन्तर्गत मुख्यतः अरहर, मूंग, उर्द की खेती खरीफ मौसम में तथा चना, मटर, मसूर एवं राजमा की खेती रबी मौसम में की जाती है। दलहनी फसलों में उपज कम होने का मुख्य कारण कीटों एवं रोगो का सही समय पर नियन्त्रण न कर पाना हैं। किसान भाइयों आइए हम जाने कि दलहनी फसलों में कौन–कौन से प्रमुख कीट एवं रोग लगते है और उसका बचाव कैसे करें।

दलहनी फसलों के प्रमुख कीट एवं रोकथाम के उपाय

प्रमुख कीटों की पहचान–

1. एफिड (माहू)

यह आकार में छोटे कीट होते है जो पौधों की पत्तियों एवं कोमल शाखाओं का रस चूसते है, जिससे पौधें काफी कमजोर हो जाते है। ये आमतौर पर हरे रंग के होते है लेकिन पीले, गुलाबी, बैगनी और लाल–भूरे जैसे अन्य रंगो मे भी दिखायी दे सकते है।

रोकथाम के उपाय–

- इस कीट की रोकथाम के लिए डाईमिथोएट या आक्सीडेमाटोन मिथाइल या इमिडाक्लोप्रिड 1 से 2 मिली. प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करे। यदि आवश्यकता हो तो 15 से 20 दिनो के बाद पुनः छिड़काव करे।
- संक्रमित पौधों के हिस्से को काटकर मिट्टी में दबा दे।

2. लीफ हॉपर (जैसिड)

दलहनी फसलों को नुकसान पहुॅचाने वाले कीटों मे से यह एक खतरनाक कीट है। ये छोटे, पतले और हरे रंग के होते है। ये मुख्यतः फसलों के रस को चूसकर पौधों को कमजोर कर देते है। पत्तियॉ पीली होकर समय से पहले गिरने लगती है। फलस्वरूप उत्पादन में भारी गिरावट आ जाती है।यदि पौधो के तने को चीरकर देखे तो तने के अन्दर सुरंग सी नजर आती है, जिसमे कीट का लार्वा या प्यूपा नजर आता है।

रोकथाम के उपाय–

- फसल चक्र अपनाएं और जैसिड प्रतिरोधी किस्मों का चयन करे।
- फसल के अवशेषो को खेत से बाहर कर दे, जिससे कीटों का प्रजनन रोका जा सके।
- कीटनाशक दवा जैसे डाईमिथोएट या आक्सीडेमाटोन मिथाइल या इमिडाक्लोप्रिड 1 से 2 मिली. प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करे। आवश्यकता पड़ने पर दूसरा छिड़काव 15 से 20 दिनो बाद पुनः करे।

3. ग्लेरूसीड बीटल

इस कीट के वयस्क नारंगी व काले रंग के होते है। यह कीट पत्तियों को रवाकर हानि पहुॅचाता है, जिससे पत्तियों पर छलनी के समान छेद दिखायी पड़ते है। यह मूॅग, उर्द एवं

अरहर के फलियों पर आक्रमण कर परागकोष को खाते है। परिणामस्वरूप ऐसे फूलों में फली नही बन पाती तथा बहुत अधिक हानि होती है।

रोकथाम के उपाय–

- इस कीट के नियन्त्रण हेतु संक्रमित खेतों में कटाई के बाद पौधों के अवशेषों को नष्ट कर दे।
- स्पाइनोसेडे 240–280 मिली 1 एकड़ या नीम तेल फार्यूलोशन का छिड़काव करे अथवा इंडोक्साकार्व 200 मिली. 1 एकड़ और डेल्टामेथ्रिन 200 मिली. 1 एकड़ की दर से छिड़काव करे।

4. स्टेम फ्लाई (तना मक्खी)

इस कीट का आक्रमण मटर की अगेती फसल पर अधिक होता है। यह कीट पौधो के तनो पर पहुॅचकर अन्दर ही अन्दर सुरंग बनाने लगती है। क्षतिग्रस्त पौधों की पत्तियॉ पीली पड़ जाती है, और पौधा मुरझाने लगता है, और अन्त में मर जाता है।

रोकथाम के उपाय–

- इसकी रोकथाम के लिए इंडोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. 350 मिली. या क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी. 150 मिली. प्रति एकड़ की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- यदि पौधो के तने को चीरकर देखे तो तने के अन्दर सुरंग सी नजर आती है, जिसमे कीट का लार्वा या प्यूपा नजर आता है।

5. फलीछेदक (पाड बोरर)

यह चना सहित कई फसलों का एक प्रमुख कीट है। वयस्क कीट हल्के भूरे या भूरे रंग का होता हैं यह कीट मुलायम पत्तियों, फूलों एवं कलियों को खाते है। जब कलियों में दाना बनना शुरू होता है तब फलियों के अन्दर प्रवेश कर नुकसान पहुॅचाना शुरू करते है। कभी–कभी इसके प्रकोप से फलियॉ सड़ जाती है। इससे उत्पादन में कमी के साथ–साथ फली की गुणवत्ता में भी कमी आ जाती है।

रोकथाम के उपाय–

- खड़ी फसल में इस कीट के नियन्त्रण के लिए मिथाइल पैराथियान (2%) या क्यूनालफास (1.5%) चूर्ण का 20-25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करे, अथवा फसल की पुष्पित अवस्था में क्युनालफास (25 ई.सी.) 1.25 ली. या कार्बोरिल (50 डब्ल्यू.पी.) 2.5 किलोग्राम घुलनशील चूर्ण का प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करे। पन्द्रह दिनो के बाद पुनः छिड़काव को दुहराये।

6. सफेद मक्खी (ह्वाइट फ्लाई)

यह कीट सफेद या हल्के पीले रंग की होती है। जो त्रिकोण आकार की होती है। ये कीट पौधो को दो तरह के नुकसान पहुॅचाते है। प्रत्यक्ष क्षति मे रस चूसकर पौधो को गम्भीर रूप से घायल कर देते है। इससे पत्तियॉ पीली पड़कर सिकुड़ जाती है, और समय से पहले ही गिर जाती है। अप्रत्यक्ष क्षति मे कीट अपने मुख से रोगग्रस्त से स्वस्थ पौधो तक वायरस पहुॅचाते है।

रोकथाम के उपाय–

- इसकी रोकथाम के लिए डाइमिथोएट 30 ई.सी. 2 मिली. प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोरापिड 17.8 एस.एल.को 1 मिली. प्रति 3 लीटर पानी की दर से 600 लीटर पानी का घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर छिड़काव करे। यदि आवश्यकता हो तो दूसरा छिड़काव 15–20 दिनो के बाद पुनः करे।

7. पर्ण सुरंगक (लीफ माइनर)

यह कीट पौधो की पत्तियों में सुरंग बनाकर रहता है तथा पत्तियों के क्लोरोफिल को खाता है,। जिससे पौधो में होने वाला प्रकाशसंश्लेषण प्रभावित होता है। इसके आक्रमण से पत्तियों पर सफेद रंग की सर्पाकार सुरंग बन जाती है। इस कीट का प्रकोप विशेषकर मटर में होता है।

रोकथाम के उपाय–

- इस कीट के रोकथाम के लिए डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1.0 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से 750 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे। अथवा थायोमेथाक्जोन 1 ग्राम दवा प्रति 5 लीटर पानी की दर से

या क्यूनालफास 25 ई.सी. 2 मिली. प्रति लीटर पानी या फास्फोमिडान 25 एस.एल. 1.0 मिली. प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिनों के बाद पुनः दवा का छिड़काव करे।

- क्षतिग्रस्त पत्तियों तथा फलियों को तोड़कर कीटो सहित नष्ट कर दे।
- फसल कटाई के बाद खेत की गहरी जुताई करे।

दलहनी फसलों की प्रमुख बीमारियॉ एवं रोकथाम के उपाय

प्रमुख बीमारियो के लक्षण

1. सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा रोग (सर्कोस्पोरा लीफ स्पाट)

सर्कोस्पोरा लीफ स्पाट दलहनी फसलों की एक महत्वपूर्ण फफूँदजनित बीमारी है। इस बीमारी से फसल की उपज में 60 प्रतिशत तक की कमी आ सकती है। बीमारी के लक्षण पत्तियों पर अलग–अलग गोलाकार हल्के भूरे रंग के रूप में दिखायी देते है, जिनके किनारे लाल–बैगनी रंग के होते है। जैसे–जैसे बीमारी बढ़ती है, धब्बे आपस में मिल जाते है। गम्भीर रूप से संक्रमित पत्तियॉ पीली हो जाती है और अन्ततः भूरी और परिगलित हो जाती हैं।

रोकथाम के उपाय–

- बीमारी के प्रबन्धन के लिए पौधो के आधार के चारो ओर मल्च का उपयोग करे।
- रोग ग्रस्त फसल के अवशेषो को भली प्रकार से नष्ट कर दे।
- बुवाई से पहले बीज से उपचारित करे।
- फसल पर रोग के प्रारम्भिक लक्षण दिखते ही कवकनाशी, कार्बेन्डाजिम 0.05% या मैन्कोजेब 0.25% की दर से एक से दो बार छिड़काव करे।

2. उकठा रोग

दलहनी फसलों में उकठा रोग फ्यूजेंरियम आक्सीस्पोरम मृदाजनित नामक फफूँद से होता है। यह रोग मुख्य रूप से फसल की जड़ों और तने को प्रभावित करता है। यह रोग गर्म और आर्द्र मौसम में फैलता है। इस रोग से फसल का उत्पादन 50 प्रतिशत तक कम हो सकता है।

रोकथाम के उपाय–

- इस रोग से बचने के लिए गर्मियों में गहरी जुताई करे ।
- बुवाई अक्टूबर के अन्त तक या नवम्बर के पहले सप्ताह मे कर देनी चाहिए।
- बीजों को ट्राइकोडर्मा 4 ग्राम प्रति किलोग्राम और वीटावैक्स 0.5 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित करके ही बोना चाहिए।
- दो से तीन वर्षो का फसलचक्र अपनाए।
- मसूर के साथ अलसी की मिश्रित खेती करे ,इससे रोग के प्रकोप में कमी आयेगी।
- रोगग्रस्त पौधो को उखाड़कर जला दे।
- खेत की सफाई का विशेष ध्यान दे।

3. चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिलडिव)

यह एक फफूँद जनित रोग है। सर्वप्रथम पौधो की पुरानी पत्तियों की नीचली सतह पर सफेद रंग के धब्बे नजर आते है। धीरे–धीरे इन धब्बों की संख्या एवं आकार बढ़ जाता है, तथा बाद में पत्तियो के दोनो और सफेद रंग की फफूँद की वृद्धि दिखायी पड़ती है। पत्तियां पीली पड़ जाती है और पौधों का विकास रूक जाता है।

रोकथाम के उपाय–

- इस बीमारी के नियन्त्रण के लिए गंधक चूर्ण 20–25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करे, अथवा 2.5 ग्राम घुलनशील गंधक या कैरायेन 1.0 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे। आवश्यकतानुसार 10–15 दिनों के अन्तराल पर पुनः छिड़काव करे।

4. बैक्टीरिल ब्लाइट(जीवाणु झुलसा) रोग

यह एक जीवाणु जनित रोग है। बीमारी के लक्षण पत्तियों और फलियों पर अनियमित से गोले आकार के काले रंग के धब्बों के रूप में प्रकट होते है। धब्बे आपस में मिलकर पत्तियों

को झुलसा देते है। तनो पर बीमारी के कारण गहरे रंग के घाव बन जाते है।

रोकथाम के उपाय–

- इस बीमारी के बचाव के लिए रोग रोधी किस्मों की बुवाई करे और बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करे।
- कम से कम 3 वर्षो का फसल चक्र अपनाए।
- फसल की बुवाई शीध्र करे।
- बीमारी के लक्षण दिखायी देने पर स्ट्रेप्टमाइसीन 400 पी.पी.एम. का छिड़काव करे।

5. पीला मोजैक वायरस

दलहनी फसलों में पीला मोजैक वायरस ह्वाइट फ्लाई के जरिए फैलती है। पीला मोजैक रोग लगने पर फसल की पत्तियां पीली पड़ जाती हैं। इसके प्रकोप के कारण पत्तियां खुरदुरी हो जाती है और इन पर सलवटे पड़ने लगती है। पत्तियां नीचे की और मुड़ने लगती है। रोगी पौधो में बहुत कम फूल और फल लगते है तथा पौधे देर से परिपक्व होते है।

रोकथाम के उपाय–

- रोग की रोकथाम के लिए समय पर कीटो का नियन्त्रण डाइमेथोइट 30 ई.सी. 2 मिली प्रति लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1.01 मिली. प्रति 3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करे।
- वायरस मुक्त वीजों का बुवाई मे स्तेमाल करें।
- संक्रमित पौधों को खेत से उखाड़कर बाहर जमीन मे दबा दे।

6. लीफ किंकल वायरस (पर्ण ब्याकुंचन)

दलहनी फसल, विशेष रूप से उड़द मे यह बीमारी विशेष रूप से देखने को मिलती है। इस बीमारी के कारण संक्रमित पौधों की पत्तियां सिकुड़ जाती है और झुर्रिया आ जाती है। खेत मे संक्रमित पौधो को दूर से ही पहचाना जा सकता है। डंठल छोटे और पत्तियों की शिराएं मोटी हो जाती है, और पौधो का विकास रूक जाता है। फूल विकृत हो जाता, है और जो भी फूल बचते है वे फीके हो जाते है।

रोकथाम के उपाय–

- इस बीमारी की रोकथाम के लिए रोगी पौधो का देखते ही उखाड़कर जला देना चाहिए।
- रोगरोधी किस्मों का चयन करे।
- कीटो का नियन्त्रण पीला मोजैक वायरस बीमारी की तरह करे।

7. ककड़ी मोजैक वायरस

यह बीमारी चने फसल की एक प्रमुख बीमारी है। इसे खीरा मोजैक भी कहा जाता है। यह वायरस एफिड की कई प्रजातियों से फैलता है, साथ ही साथ बीजों से भी फैलता है। संक्रमित पौधो की पत्तियों पर रंगहीन धब्बे बनते है और पत्तियां विकृति हो जाती है।

रोकथाम के उपाय–

- इस बीमारी की रोकथाम हेतु पील मोजैक वायरस के रोकथाम के लिए बताए गये उपायो के जैसा करे।

दालों का सुरक्षित भण्डारण एवं निवारक उपाय

गहाई के बाद भण्डारण से पूर्व इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि दाने पूरी तरह से सूख चुके हो ,तथा अनाज भण्डारण से पहले भण्डार घर की अच्छी तरह से सफाई करे ,तथा कुड़े–कचड़े को जला कर नष्ट कर दे।

➢ दाल भण्डारण के प्रमुख कीट एवं पहचान

प्रायः खाद्यानों में लगने वाले कीट लेपिडोप्टेरा एवं कोलिओप्टेरा आर्डर के होते है, जो भण्डारित अनाज में अधिक नमी और तापमान की दशा में अत्यधिक हानि पहुंचाते है। दाल भण्डारण के प्रमुख कीट निम्नवत् है।

1. **सुरसुरी:** यह कीट भूरे काले रंग का होता है और इसकी लम्बाई 2–4 मिमी. तक होती है। इसके पंखों पर हल्के धब्बे होते है, और इसका सिर आगे की ओर झुका होता है। पौढ़ उड़ने में सक्षम और मजबूत होते है। यह कीट अनाज को अन्दर से खाकर उसे खोखला कर देता है।
2. **छोटा बेघक:** यह कीट ज्यादातर कीटनाशियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता

बिकसित कर चुका है। प्रौढ़ कीट छोटे (3 मिमी. लम्बाई तक) गहरे भूरे रंग के और सिर गर्दन के अन्दर झुका होता है। प्रौढ़ उड़ने में सक्षम और मजबूत होते है। प्रौढ़ और सूँड़ी दोनो ही क्षति पहुँचाते है। मादा कीट अनाज के सतह पर 200–400 अण्डे देती है। ये कीट अनाज में छिद्र बनाकर अन्दर घुस कर अनाज को खाकर खोखला कर देते है तथा अनाज को आटे में परिविर्तत कर देते है।

3. **खपड़ा बीटल**: यह कीट दुनियां के सबसे विनाशकारी कीटों में से एक है। वयस्क खपरा बीटल गहरे भूरे रंग के होते है, और ये अण्डाकार आकार के होते है। ये बीटल 1.6 से 3 मिमी. लम्बे होते है। इनके पंखो के आवरण पर पीले–भूरे से लेकर लाल–भूरे रंग के निशान होते है। ये बीटल चिकने और बारीक बालो से ढके होते है। यह अनाज की गुणवत्ता को नष्ट कर देता है जो मानव और पशु उपयोग के लिए अनुपयुंक्त बना देता है।
4. **दालों का भृंग**: यह कीट भण्डारित दालो जैसे कि अरहर, चना और लोबिया को गम्भीर रूप से नुकसान पहुँचाता है। ये कीट दिल के आकार के होते है, जिनकी लम्बाई 4.5 मिमी. होती है और सफेद रंग के अण्डे देते हैं । इस कीट का शरीर भूरे रंग का होता है ,तथा शरीर आगे की ओर नुकीला तथा पीछे चौड़ा होता है। सूँड़ी दानो में छिद्र कर अन्दर घुसकर अनाज को खाते है।
5. **कटवर्म, डायमंडवैक मॉथ और एर्माइन पतंगा :** दाल में कीडे लगने वाले पतंगो में ये सभी कीटो में प्रमुख है, और इन कीड़ो से दालों को काफी नुकसान पहुँचता है। कटवर्म पतंगा लगभग 20 मिमी. डायकंडबैक मॉथ 10–12 मिमी. ओर एर्माइन पतंगा 16–20 मिमी. लम्बा होता है। इस कीट के सूडी दानो के भीतर छिद्र कर खाते है और विकसित होकर प्रौढ़ के रूप में निकलते है।

➢ **निवारक उपाय:** जिस तरह गेहूँ एवं चावल में घुन जल्दी लग जाते है, ठीक उसी तरह से दाले भी खराब हो सकती है, यदि सही से स्टोर ना किया जाय। दालों के भण्डारण में निम्नलिखित सावधानियॉ लेनी चाहिए जो निम्नवत् है–

1. दालों के भण्डारण से पहले अच्छी तरह से घूप में सुखा ले।
2. भण्डारण के लिए कॉच के जार, टाईट ढक्कन वाले प्लास्टिक कंटेनर या धातु के डिब्बो का इस्तेमाल करें जो एयरटाइट हो।
3. भण्डारण की जगह पर नमी न जमने दे।
4. दालों को अलमारी में या किसी ठंडे, सूखे स्थान पर रखे, या तेजपत्ता की कुछ पत्तियॉ कंटेनर में डाल दे।
5. दालो को धुन या कीड़ो से बचाने के लिए दाल की जार में नीम की कुछ पत्तियॉ डाल दे। ध्यान रहे कि नीम की सूखी पत्तीयों का ही इस्तेमाल करे। कंटेनर में सबसे नीचे नीम की पत्तियां डाले, उसके बाद दाल डाले ,जो कि लम्बे समय तक खराब नही होगा।
6. दाल की जार मे लौंग के कुछ दाने भी डाल कर ,दाल को धुन एवं कीड़ो से बचाया जा सकता है।
7. मसूर की दाल की जार में बिना छिलका उतारे लहसुन की कुछ कलियां डाल दे, और जब लहसुन कुछ महीनों के बाद सूख जाय तो सूखे हुए लहसुन को निकालकर पुनः फ्रेश लहसुन डाल दे।
8. यदि दाल में घुन कीड़े लग गये हो तो उसे धूप में किसी बड़े कपड़े पर फैलाकर सुखाये और यह प्रकिया 2 से 3 दिनों तक लगातार करे। इससे दाल के अन्दर घुसे हुए धुन एवं कीड़े निकल जायेंगे।
9. दालों को सूखे कंटेनर में डाल दे, फिर उसमें 1 से 2 चम्मच सरसों का तेल डाल दे, और अच्छी तरह से मिक्स कर दे। ऐसा करने से नमी वाले मौसम में दाल खराब नही होगी और इसमें कीड़े भी नही लेगेंगे।
10. यदि आपको उड़द या चना की दाल आदि कम मात्रा में भण्डारण करना हो तो दाल से भरे कंटेनर को फ्रिज में रख दे। इस तरह से दाल लम्बे समय तक खराब नही होगा।